doubtnut
India's Number 1 Education App

HINDI

BOOKS - X BOARDS

HINDI (COURSE A) 2016 TERM I

खण्ड क

1. निस्संदेह यह फैशन विधार्थियो के लिए महंगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते है। अध्यापक उन्हें सर दर्द समझते है। समाज जो उन्हें भावी भारत समझता है उसकी

आशाएँ निराधार हो जाती है, क्योकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य उद्देश्य 'विद्या' को भूल जाते है। हमारी वेशभूषा का अच्छा या बुरा प्रभाव दुसरो की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, वह धर्म से भी नहीं मिलती। सौम्य वेषधारी छात्र अपने मार्ग से भटकता नहीं है। उसका ध्यान केवल और केवल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और ऐसे ही लोगो कि आज जरूरत है, ताकि हमारा देश उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर रहे।

आत्मशांति मिलती है:

A. धर्म से

B. सेवा से

C. सौम्य वेश से

D. फैशन से

Answer:

Watch Video Solution

2. निस्संदेह यह फैशन विधार्थियो के लिए महंगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते है। अध्यापक उन्हें सर दर्द समझते है। समाज जो उन्हें भावी भारत समझता है उसकी

आशाएँ निराधार हो जाती है, क्योकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य उद्देश्य 'विद्या' को भूल जाते है। हमारी वेशभूषा का अच्छा या बुरा प्रभाव दुसरो की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, वह धर्म से भी नहीं मिलती। सौम्य वेषधारी छात्र अपने मार्ग से भटकता नहीं है। उसका ध्यान केवल और केवल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और ऐसे ही लोगो कि आज जरूरत है, ताकि हमारा देश उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर रहे।

विधार्थी का बहुमूल्य उद्देश्य है :

A. धन कमाना

B. विद्या प्राप्ति

C. फैशन करना

D. महंगा सौदा

Answer:

Watch Video Solution

3. निस्संदेह यह फैशन विधार्थियो के लिए महंगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते है। अध्यापक उन्हें सर दर्द समझते है। समाज जो उन्हें भावी भारत समझता है उसकी

आशाएँ निराधार हो जाती है, क्योकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य उद्देश्य 'विद्या' को भूल जाते है। हमारी वेशभूषा का अच्छा या बुरा प्रभाव दुसरो की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, वह धर्म से भी नहीं मिलती। सौम्य वेषधारी छात्र अपने मार्ग से भटकता नहीं है। उसका ध्यान केवल और केवल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और ऐसे ही लोगो कि आज जरूरत है, ताकि हमारा देश उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर रहे।

उसका प्रभाव हमारे चरित्र पर पड़ता है:

A. हमारी चंचलता का

B. भावना का

C. स्वभाव का

D. वेशभूषा का

Answer:

4. निस्संदेह यह फैशन विधार्थियो के लिए महंगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते है। अध्यापक उन्हें सर दर्द समझते है। समाज जो उन्हें भावी भारत समझता है उसकी

आशाएँ निराधार हो जाती है, क्योकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य उद्देश्य 'विद्या' को भूल जाते है। हमारी वेशभूषा का अच्छा या बुरा प्रभाव दुसरो की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, वह धर्म से भी नहीं मिलती। सौम्य वेषधारी छात्र अपने मार्ग से भटकता नहीं है। उसका ध्यान केवल और केवल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और ऐसे ही लोगो कि आज जरूरत है, ताकि हमारा देश उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर रहे।

'बुरा प्रभाव' में बुरा किस प्रकार का विशेषण है ?

A. परिमाणवाचक

B. सार्वनामिक

C. गुणवाचक

D. गणनावाचक

Answer:

Watch Video Solution

5. निस्संदेह यह फैशन विधार्थियो के लिए महंगा सौदा है। वे घरवालों के लिए समस्या बन जाते है। अध्यापक उन्हें सर दर्द समझते है। समाज जो उन्हें भावी भारत समझता है उसकी

आशाएँ निराधार हो जाती है, क्योकि बचपन की चंचलता के कारण सस्ती भावना में भटककर वे अपने बहुमूल्य उद्देश्य 'विद्या' को भूल जाते है। हमारी वेशभूषा का अच्छा या बुरा प्रभाव दुसरो की अपेक्षा हम पर अधिक पड़ता है। उसका प्रभाव हमारी भौतिक उन्नति पर ही नहीं, चरित्र पर भी पड़ता है। अंग्रेजी के प्रसिद्ध विचारक और लेखक एमर्सन कहना है कि सौम्य वेश से जो आत्मशांति मिलती है, वह धर्म से भी नहीं मिलती। सौम्य वेषधारी छात्र अपने मार्ग से भटकता नहीं है। उसका ध्यान केवल और केवल लक्ष्य पर केंद्रित रहता है और ऐसे ही लोगो कि आज जरूरत है, ताकि हमारा देश उन्नति की ओर निरंतर अग्रसर रहे।

'भौतिक' शब्द में मूलशब्द तथा प्रत्यय है:

A. भूत + इक

B. भोत + इक

C. भू + तिक

D. भूति + क

Answer:

6. जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमे आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वायलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से

अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुंह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है । सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है । जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा ? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा । वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा । मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है । सबसे बड़ा गन भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

गधांश के अनुसार मनुष्य का सबसे बड़ा गुण माना गया है-

A. आत्मनिर्भरता

B. मधुर भाषण

C. स्पष्टवादिता

D. सत्यवादिता

Answer:

View Text Solution

7. जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमे आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वायलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से

अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुंह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है । सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है । जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा ? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा । वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा । मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है । सबसे बड़ा गन भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

स्वावलंबी व्यक्ति द्वारा किसी काम को कर डालने का मूल आधार होता है उसका-

A. दृढ़ विश्वास और विवेक।

B. स्पष्टवादिता और विवेक।

C. आत्मबल और दृढ़ विश्वास।

D. सत्यवादिता और आत्मबल।

Answer:

Watch Video Solution

8. जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमे आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वायलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से

अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुंह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है । सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है । जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा ? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा । वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा । मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है । सबसे बड़ा गन भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

स्वावलंबी व्यक्ति की दासी होती है -

A. असफलता

B. याचकता

C. दरिद्रता

D. सफलता

Answer:

Watch Video Solution

9. जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमे आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वायलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से

अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुंह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है । सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है । जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा ? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा । वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा । मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है । सबसे बड़ा गन भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

आत्मनिर्भर व्यक्ति का सहज गुण है कि वह-

A. धैर्यपूर्वक काम करता है।

B. प्रेमपूर्वक रहता है।

C. सोच-समझकर धैर्य से काम करता है।

D. अपने विवेक से सुखी रहता है।

Answer:

Watch Video Solution

10. जब व्यक्ति स्वावलंबी होगा, उसमे आत्मनिर्भरता होगी, तो ऐसा कोई कार्य नहीं जिसे वह न कर सके। स्वायलंबी मनुष्य के सामने कोई भी कार्य आ जाए, तो वह अपने दृढ़ विश्वास से

अपने आत्मबल से उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में उसे अवश्य ही संपूर्ण कर लेगा। स्वावलंबी मनुष्य जीवन में कभी भी असफलता का मुंह नहीं देखता। वह जीवन के हर क्षेत्र में निरंतर कामयाब होता जाता है । सफलता तो स्वावलंबी मनुष्य की दासी बनकर रहती है । जिस व्यक्ति का स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं वह भला क्या कर पाएगा ? परन्तु इसके विपरीत जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता होगी, वह कभी किसी के सामने नहीं झुकेगा । वह जो करेगा सोच-समझ कर धैर्य से करेगा । मनुष्य में सबसे बड़ी कमी स्वावलंबन का न होना है । सबसे बड़ा गन भी मनुष्य की आत्मनिर्भरता ही है।

कामयाब शब्द है-

A. तत्सम

B. तद्भव

C. देशज

D. आगत

Answer:

View Text Solution

11. यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना, जब असमंव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना, तू ऐसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी , सोच मत केवल तुझे ही यह

पड़ा मन में बिठाना, हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है, तू इसी पर आज अपने चित का अपधान कर ले, पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले। कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे ह्दय में, देखते सब है इन्हे उसकी उम्र, अपने समय में, और तू कर यत्न भी तो मिल नहीं सकती सफलता, ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनो के लिए, किन्तु जग के पंथ पर यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ, स्वप्न पर ही मुग्धा हो, सत्य का भी ज्ञात कर ले, पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।

स्व्प्न पर ही मुग्धा मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले, पंक्ति का आशय बताये-

A. हमे अच्छे-अच्छे स्वप्न देखने चाहिए

B. स्वप्नों से मोहित न होकर वास्तविकता का ज्ञान करना चाहिए।

C. हमे स्वप्न भी देखने चाहिए तथा सत्य का ज्ञान भी करना चाहिए

D. इनमे से कोई नहीं

Answer:

Watch Video Solution

12. यह बुरा है या कि अच्छा, व्यर्थ दिन इस पर बिताना, जब असमंव छोड़ यह पथ दूसरे पर पग बढ़ाना, तू ऐसे अच्छा समझ, यात्रा सरल इससे बनेगी , सोच मत केवल तुझे ही यह पड़ा मन में बिठाना, हर सफल पंथी यही विश्वास ले इस पर बढ़ा है, तू इसी पर आज अपने चित का अपधान कर ले, पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले। कौन कहता है कि स्वप्नों को न आने दे ह्दय में, देखते सब है इन्हे उसकी उम्र, अपने समय में, और तू कर यत्न भी तो मिल नहीं सकती सफलता, ये उदय होते लिए कुछ ध्येय नयनो के लिए, किन्तु जग के पंथ पर यदि स्वप्न दो तो सत्य दो सौ, स्वप्न पर ही मुग्धा हो, सत्य का भी ज्ञात कर ले, पूर्व चलने के बटोही, बाट की

पहचान कर ले।

बटोही और बात से यहाँ क्या तात्पर्य है-

A. रास्ता और राहगीर

B. लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रत्नशील मनुष्य और उसका लक्ष्य मार्ग

C. मार्ग पर चलने वाला पथिक

D. पथिक और रास्ता

Answer:

Watch Video Solution

खण्ड ख

1. निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए-

(क) सरल अपने घर में बैठकर ही पढ़ती रहती है।

(ख) ज्यों ही घंटी बज त्यों ही सभी छात्र घरो की ओर चल पड़े।

(ग) कठिन परिश्रम करो ओर पास होकर दिखाओ।

View Text Solution

2. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिये

(क) रामचंद्र रोज रामायण पढ़ता है।

(ख) सुरेंद्र द्वारा फुटबाल खेला जाता है।

(ग) जगदीश तो रो भी नहीं सका।

(घ) श्यामसुंदर के घर कल कौन गीता पढ़ रहा था ?

View Text Solution

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए।

(क) भूषण वीर रस के कवि थे।

(ख) वह अपनी कक्षा का मॉनीटर है।

(ग) धीरे-धीरे जाओ ओर बाजार से पेन ले आओ।

(घ) हमेश तेज चला करो।

View Text Solution

4. निम्न प्रश्नो के निर्देशानुसार उत्तर दीजिये-

(क) रौद्र रस का आलंबन विभव लिखिए।

(ख) श्रंगार रास का उद्दीपन विभाव लिखिए।

(ग) "राम कौ रूप निहारती जानकी कंकण के नग की परिछाहीं' में रस बताइये।

(घ) "रीझहिं राजकुँवरी छवि देखि, इनहिं बरहिं ह्री जनि विशेखी" में रस का उल्लेख कीजिये।

View Text Solution

खण्ड ग

1. जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिको का यह प्रयास सराहनीय ही खा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वर्ण तो देशभक्ति भी आजकल मजाक कि चीज होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिए। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है।

पहले मोठे फ्रेमवाला चौकोर श्चमा तथा, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वह भई ! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

हालदार साहब को कस्बे के नागरिको का कौन-सा प्रयास सराहनीय लगा और उन्हें इसमें उनके किस भाव की अनुभूति हुई ?

View Text Solution

2. जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर

पहुंचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिको का यह प्रयास सराहनीय ही खा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वर्ण तो देशभक्ति भी आजकल मजाक कि चीज होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिए। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोठे फ्रेमवाला चौकोर श्चमा तथा, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वह भई ! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।

दूसरी बार उधर से जाने पर हालदार साहब को मूर्ति में क्या अंतर दिखाई दिया और इससे उन्हें कैसा लगा ?

View Text Solution

3. जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिको का यह प्रयास सराहनीय ही खा जाना चाहिए। महत्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वर्ण तो देशभक्ति भी आजकल मजाक कि चीज होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिए। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोठे फ्रेमवाला चौकोर श्चमा तथा, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतुक और बढ़ा। वह भई ! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन

चश्मा तो बदल ही सकती है।

गधांश के पाठ का तथा लेखक का नाम लिखिए।

View Text Solution

4. निम्नलिखित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिये-

(क) बालगोबिन भगत बेटे की मृत्यु पर रोटी हुई पतोहू से उत्सव मनाने को क्यों कह रहे थे ? इस संदर्भ में उनका दर्शन किस्से प्रभावित था ?

(ख) नवाब के थककर लेट जाने का कारण लेखक ने क्या बताया ?

(ग) लेखक ने फादर कामिल बुल्के को मानवीय करुणा की

दिव्य चमक क्यों कहा है?

(घ) मूर्ति के असली चश्मे के विषय में हालदार साहब की जिज्ञासा का पान वाले ने क्या कहकर समाधान किया ? उस समाधान से चश्मा बदलने वाले के प्रति हालदार साहब की कैसी विचारधारा बनी और उन्होंने आज के लोगो तथा कौम के प्रति क्या चिंता प्रकट की ?

(ड) बालगोबिन भगत ने अपने पुत्र की मृत्यु के बाद पतोहू के साथ कैसा व्यवहार किया ? उनके इस व्यवहार को आप कहाँ तक उचित मानते है ?

View Text Solution

5. फसल क्या है? और तो कुछ नहीं है वह नदियों के पानी का जादू है वह हाथो के स्पर्श की महिमा है भूरी-काली -संदली मिटटी का गुण-धर्म है रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

फसल नदियों के पानी का जादू किस तरह है? स्पष्ट कीजिये।

View Text Solution

6. फसल क्या है? और तो कुछ नहीं है वह नदियों के पानी का जादू है वह हाथो के स्पर्श की महिमा है भूरी-काली -संदली मिटटी का गुण-धर्म है रूपांतर है सूरज की किरणों

का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

फसल किसका गुण-धर्म होता है और किस तरह ?

View Text Solution

7. फसल क्या है? और तो कुछ नहीं है वह नदियों के पानी का जादू है वह हाथो के स्पर्श की महिमा है भूरी-काली -संदली मिटटी का गुण-धर्म है रूपांतर है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

हवा फसल पर अपना प्रभाव किस रूप में डालती है ?

View Text Solution

8. निम्नलिखित प्रश्नो के संक्षिप्त उत्तर दीजिये-

(क) "मदन महिप जो को बालक बसंत ताहि" में प्रयुक्त अंलकार का नाम लिखिए तथा पंक्ति का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिये।

(ख) कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है?

(ग) कवि को बच्चे की मुस्कान किस वशता में और अधिक शोभाशाली लग उठती है ? "यह दंतुरित मुसकान" पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

(घ) "कही साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो" पंक्ति में किसकी विशिष्टता व्यंजिते हुई है? बताइये कि वह उसकी कौन-सी खूबी है जिससे घर-घर भर जाता है ? "अट नहीं रही है'

कविता के आधार पर उत्तर दीजिये ।

(ड) सूरदास की काव्य -भाषा की दो प्रमुख विशेषताएं बताइए ?

View Text Solution

9. छाती पर चढ़कर बाप की मूंछे उखड़ता हुआ छोटा बच्चा बुरा क्यों नहीं लगता। 'माता का अंचल' पाठ के आधार पर इस तथ्य का विश्लेषण करते हुए बताइए कि पिता बच्चो का ललन-पालन कैसे करते है।

View Text Solution

खण्ड घ

1. दिए गए संकेत - बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 - 250 शब्दों में निबंध लिखिए।

भूमिका भारत की परंपराएं ज्ञानी था जगतगुरु विश्व का आकर्षण विविधता में एकता आजादी कल्पनाएं उपसंहार

View Text Solution

2. विधार्थी जीवन के लक्ष्य भूमिका विधार्थी जीवन की आवश्यकताएँ व्यसनों से दूरी विधार्थी की लक्ष्य केंद्रिकता उपसंहार

View Text Solution

3. प्रकति से छेड़खानी भूमिका छेड़खानी के स्वरूप बढ़ता प्रदूषण सुरक्षा और संरक्षण के उपाय उपसंहार

View Text Solution

4. अपनी योग्यता तथा खेलों में रूचि का परिचय देते हुए अपने विधालय के प्रधानाचार्य महोदय को विधालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित खेलों में भी भाग लेने की अनुमति के लिए प्रार्थना - पत्र लिखिए।

View Text Solution